Comparisons are always odious. We have ventured to make above observations by way of comparsion becouse we feel that, despite the fact that Zila Parishads of Andhra enjoy more powers than of Rajasthan ; this latter State in many small but sifnificant ways, is encouraging the spirit of democratic working not democratic composition alone - in these newly cereated institutions. We are confident that these observations will be taken by Andhra and other States in tne spirit they are made.

Sd./- 1 N. Keshava

2 Mool Chand Jain
as Members of Study team on
Panchayati Raj appointed by the
Congress Party in Parliament

25-12-60

downloaded from moolchandjain.org

भगवान महावीर का 2500वां निर्वाण महोत्सव

(बाबू जी के विचार जो 'वीर' समाचार पत्र में 15 फरवरी, 1973 को प्रकाशित हुए।)

कुछ साल पहले जैसे भगवान बुद्ध की पच्चीस सौ वीं निर्वाण जयन्ती सारे भारत में मनायी गई थी। उसी प्रकार अप्रैल सन् 1973 में भगवान महावीर का पच्चीस सौ वां निर्वाण महोत्सव सारे भारत में मनाया जायेगा। जहां भिन्न-भिन्न जैन सम्प्रदायों ने इस महोत्सव को मनाने के लिये समितियां बनाई है। वहां भारत सरकार ने भी एक अखिल भारतीय समिति बनाई है जिसके प्रधान स्वयं हमारी प्रधानमन्त्री 'श्रीमती इन्दिरा गांधी जी' हैं। भारत सरकार ने इस ध्येय के लिये 50 लाख रुपया खर्च करने का वचन दिया है।

मानव समाज को भगवान महावीर की सबसे बड़ी देन "अहिंसा परमोधर्म" का मन्त्र है। उसकी साधारण व्याख्या है :—"मन वचन और कर्म से किसी प्राणी को कष्ट न देना"। हजारों सालों से भगवान महावीर के अनुयायी इस सिद्धान्त पर दृढ़ता से अमल करने का प्रयत्न करते रहे हैं और भारत के सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में अपना योग दान देते आये हैं। हजारों वर्षों तक भारत की संस्कृति मध्य एशिया से लेकर पूर्वी एशिया तक तमाम देशों में छाई रही, परन्तु एक वक्त आया कि भारत पर विदेशियों के आक्रमण होने लगे और धीरे-धीरे भारत पराधीन होने लगा। अंग्रेजों ने पूरे भारत को गुलाम बना लिया। इस आधीनता के खिलाफ भारत में स्वतन्त्रता की लहर उठी। सन् 1857 में फौजों ने बगावत की। परन्तु अंग्रेज इस बगावत को दबाने में कामयाब हो गया। परन्तु आजादी की लहर दब न सकी। फिर उभरी। 1885 में कांग्रेस का जन्म हुआ। कुछ समय पश्चात् 'लोक-मान्य तिलक' ने नारा लगाया कि "आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" अंग्रेज की गुलामी की जंजीरों में जकड़ी भारत मां को कैसे आजाद कराया जाये, यह सवाल सभी देशवासियों के लिये महत्वपूर्ण बन गया। हर देशवासी अंग्रेजों से भयभीत था। इतना बड़ा साम्राज्य जिसमें कभी सूर्य न छिपता हो, उससे छुटकारा कैसे मिले ? गांवों में साधारण लोग पुलिस के सिपाही से तो क्या चौकीदार से भी डरते थे। क्रांतिकारी नौजवानों ने इक्के-दुक्के बहादुरी के कदम उठाये, कहीं सरकारी खजाना लूटा कहीं किसी अंग्रेज को मारा। इससे कुछ समय के लिये जानकार हलकों में वाह-वाह तो हो गयी मगर साधारण लोगों का डर ज्यों का त्यों बना रहा। इसी डर के कारण ही अंग्रेज की हकूमत टिकी हुई थी।

साधारण लोगों का डर कैसे दूर हो, इस प्रश्न का हल गांधी जी ने किया। "अहिंसा परमोधर्म" का सहारा लिया। मगर इस सिद्धान्त का अर्थ और ज्यादा व्यापक किया। उसके अर्थ यही नहीं रहे कि "मन वचन और कर्म" से किसी को कष्ट न दिया जावे।" किन्तु यह भी किये कि मन, वचन, कर्म से दुखी का दुःख दूर किया जावे। जिस पर अत्याचार होता हो उसे मन वचन और कर्म से अत्याचारी से बचाया जाये। अहिंसक रहते हुये यह कैसे हो सकता है। इसके लिये सत्याग्रह और नार्मिल-वर्तन का हमें एक मन्त्र दिया। यानी बुराई, अत्याचारी को किसी प्रकार का सहयोग न दें और आवश्यकता हो तो सत्याग्रह करते हुए जेल आदि में जाना पड़े तो उसे भी खुशी से कबूल किया जाये। जेल में बन्द होने का ही सब से बड़ा डर लोगों के दिल में था। जब बड़े नेता जेलों में जाने लगे और उनके पीछे साधारण कार्यकर्ता भी तब हकूमत का भय काफूर होने लगा। विदेशी हकूमत के खिलाफ गांधी जी ने कई अहिंसात्मक आन्दोलन चलाये और आखिर में "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नारा लगाकर सन् 1942 में आन्दोलन चलाया जिसके फलस्वरूप सन् 1947 में अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और इस तरह अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धान्तों ने देश की एक बहुत बड़ी समस्या "स्वतन्त्रता प्राप्त करना" को हल किया। इन्हीं आन्दोलनों और सफलता के कारण दुनिया के बड़े-बड़े ज्ञानियों का ध्यान अहिंसा की तरफ गया और गहराई से इस मन्त्र का अध्ययन होने लगा और वह सोचने लगे कि भगवान महावीर के दिये इस मन्त्र में शायद दुनियां का कल्याण छिपा है।

में स्वतन्त्र हुये पच्चीस साल से अधिक हो गये, मगर यह केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता थी। पिछले दिनों लोक-सभा में बताया गया कि भारत में 60 लाख पढ़े लिखे नौजवानों ने रोजगार दिलाऊ दफ्तरों में नाम लिखवाये हुए है। इससे स्पष्ट है कि उनसे कहीं ज्यादा गिनती में ऐसे बे-रोजगार नौजवान हैं जिन्होंने अपने नाम इन दफ्तरों में नहीं लिखवाये। लोक सभा में यह भी बताया गया कि भारत में 22 करोड़ से ज्यादा ऐसे लोग हैं जो गरीबी की लाईन से भी नीचे हैं। भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी और महंगाई की चक्की

में जनता पिस रही है। आर्थिक विषमता बढ़ गई है। गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार और विषमता आज की समस्या है। इनका समाधान हुये बिना किसी भी भारतीय को सुख और शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। क्या अहिंसा परमोधर्म के सिद्धान्त से यह समस्या हल की जा सकती है? इस सिद्धांत की क्या नई व्याख्या करें कि इन समस्याओं का समाधान हो और दूसरी ओर इस सिद्धांत को सीमित करने की बजाय इसे और व्यापक बनाया जा सके।

या स्वतन्त्रता की समस्या हल करने के लिये गांधी जी ने जैसे अहिंसा के साथ सत्याग्रह का सिद्धांत जोड़ा था वैसे ही गरीबी बेरोजगारी आदि उपरोक्त समस्याओं का हल करने के लिये कोई और सिद्धांत जोड़ा जाय जैसे गांधी जी ने ट्रस्टीशिप का विचार दिया था और उसके बाद विनोबा जी ने भूदान और सम्पत्ति दान का मार्ग दिखाया है और अब ग्राम दान और नगर दान तक पहुंच गये हैं। मगर बिनोबा जी तो कहते है कि सभी भूमि सम्पत्ति गोपाल की है।

सभी सम्पत्ति गोपाल की है तो फिर साधारण लोगों को भाग्य की भूल भुलैया से कैसे निकालें? क्योंकि उन्हें तो यह दरसाया गया है कि जिसने पिछले जन्म में अच्छे कर्म किये, वह धनी के घर पैदा हुआ। जिसने बुरे कर्म किये, वह गरीब के घर और इस प्रकार कर्मवाद के साथ सम्पत्ति को जोड़ दिया। वास्तव में व्यक्तिगत सम्पत्ति ने कर्मवाद का ही नहीं, समाज का हुलिया बिगाड़ दिया है। अहिंसा के आधार पर गरीबी, बेरोजगारी और विषमता आदि की भयानक समस्याओं का हल करना है तो फिर गांधी जी और विनोबा जी की बात पर ध्यान देना होगा। कर्मवाद की सच्ची व्याख्या करनी होगी और इसके प्रभाव से सम्पत्ति को निकालना होगा। सम्पत्ति भाग्य के चक्कर से निकली तो सम्पत्ति व्यक्ति का मूल अधिकार तो रहेगा ही नहीं सारी सम्पत्ति का मालिक समाज हो जायेगी। समाज सारी सम्पत्ति की मालिक समझी जावे—तब समाज की व्यवस्था और गठन भी नये, ढंग से करनी होगी। मैं समझता हूं कि महावीर स्वामी के 25 सौ वें निर्वाण दिवस के शुभ अवसर को हम भली प्रकार मनावेंगे अगर हमारा ध्यान इन बुनियादी सवालों की तरफ जावे। इन पर विचार गोष्ठी की जावे, लेख लिखे जावें, रिसर्च के द्वारा खोज की जावे और हम इन मौलिक प्रश्नों का केवल समाधान ही न करें किन्तु आचरण में भी लें। यदि हम ऐसा कर सकें तो भारत दुनिया के लिए नया मार्ग दर्शन करेगा और जिस आर्थिक और सामाजिक क्रांति की जरूरत है वह खून खराबी के बजाय शान्ति (अहिंसक) ढग से आ सकेगी, और महावीर स्वामी की देन "अहिंसा परमोधर्म" का डंका दुनिया में बज जायेगा।

downloaded from moolchandjain.org

बाबू जी द्वारा आपातकाल के दौरान 16 मई 1977 को जेल से स्वामी इन्द्रवेश को लिखे गए पत्र के अंश

आदरणीय स्वामी जी,

जय हिन्द! आपका संदेश पढ़ा। आप का मुझ से जो विशेष स्नेह हो गया है, इसके लिये आप का अभारी हूं। मेरे बाहर आने के लिये आप ने दिलचस्पी दिखा रहे हैं, यह उसी स्नेह का प्रतीक है।

बाहर की हालत का जो चित्र आपने खींचा है, उससे मतभेदन नहीं, परन्तु जो इलाज आप ने बताया है, उससे है। यह समय हमारी आजमाइश का था। केवल अपनी हिम्मत की आजमाइश का नहीं अपितु ईश्वर में अपनी आस्था की आजमाइश की थी। आन्दोलन का उद्देश्य केवल ही सरकार को गतिशील बनाना और सरकार को बदलना हो। मगर अमरजैन्सी लागू करने पर नागरिक स्वतन्त्रता के सारे अधिकार छीन कर पूर्ण तानाशाही स्थापित कर दी जावे और जिसमें, प्रधानमन्त्री तक, सभी हाकिमों को सफेद झूठ बोलने और सत्य को दबाने में कोई लज्जा ने आवे, रूल आफ ला समाप्त कर दिया जायें और कांग्रेस विरोधियों को अपनी मातृ-भूमि में ही घटिया दर्जे का नागरिक समझा जाये, तो यह पहले से भी ज्यादा अत्याचार की बातें कैसे सहन की जा सकती है? इनसे सम्पूर्ण भारत बड़ जेलखाना बन गया है। बड़ी जेल में रहे और भ्रम स्वतन्त्र नागरिक का करते रहें या चूहों की तरह बिलों में दुबके रहें या राजनीतिक काम न करने का आशवासन दें क्या इससे अच्छा छोटी जेल में रहना ठीक नहीं है? कृपया सोचिये कि मेरी तरह सारे नजरबन्द ऐसा करने लगें और स्यासी काम न करने का भरोसा (assurance) देकर पैरोल पर चले जावें तो उससे देश के स्वाभिमान का क्या बनेगा? लोकतन्त्र कहा जायेगा?

नंगी तानाशाही आज बेशक सफल दिखाई दे, और जेल में पड़े नजरबन्द चाहे गिनती में थोड़े हों, इस तानाशाही के विरुद्ध खुले चैलेन्ज का प्रतीक हैं। मेरी आत्मा को शान्ति देने के लिये यही काफी है। मुझे दुख है कि आप और मैं जेल में जो बातें करते थे कि आप आर्य समाज के तंग दायरे से कैसे छुटकारा पावें। हालात ने फिर न केवल आपको वहीं धकेल दिया है अपितु यह हरियाणा सरकार आप के संगठन के माध्यम से विरोधी लोकतांत्रिक पक्ष को कमजोर करना चाहती है। कृपया आप दूर की सोचें। निकट लाभ की तो हर कोई सोचता है।

गीता का अनाशक्ति योग सिद्धान्त में आपको सामने रखता हुआ क्या अच्छा लगूंगा?

यह हैं मेरे विचार। मेरा सुभाग्य है कि मेरी पत्नी इन विचारों से सहमत है। पं० श्रीराम जी की तरह हरियाणा सरकार मुझे या किसी नजरबन्द को रिहा करे तो मैं बाहर जाकर रीएक्शनरी फोर्सज को मजबूत नहीं करूंगा, न पहले किया, आप जानते ही हैं।

शताब्दी समारोह के लिये बधाई। आशा है आप इस समारोह के जोश में जेल में इतनी मेहनत से सीखी अंग्रेजी भाषा न भूलें होंगे और इस का अभ्यास चालू होगा।

स्वामी अग्निवेश जी को नमस्ते कहना और यह पत्र भी बेशक पढ़ा देना।

आदर सहित।

आपका

मूलचन्द जैन